SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

पहले सवाल पूछना नागरिकता थी, अब गुनाहः लोकतंत्र, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और मीडिया की स्वतंत्रता पर एक समसामयिक अध्ययन

सुरेन्द्र कुमार, पीएच–डी., पोस्ट डॉक्टोरल फेलो, जनसंचार विभाग
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
सुरेन्द्र कुमार, पीएच–डी.
E-mail : surendra4media@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 16/04/2025
Revised on : 17/06/2025
Accepted on : 26/06/2025
Overall Similarity : 02% on 18/06/2025

शोध सार

यह शोध पत्र लोकतंत्र के तीन प्रमुख स्तंभों नागरिक चेतना, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, और मीडिया की निष्पक्षता की समकालीन स्थिति का विश्लेषण करता है। बीते कुछ वर्षों में यह प्रवृत्ति स्पष्ट हुई है कि सत्ता से प्रश्न करना अब केवल नागरिक अधिकार नहीं रहा, बल्कि एक संदेहास्पद कृत्य बन गया है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, जो एक स्वस्थ लोकतंत्र की पहचान होती है, सीमाओं और बंदिशों के घेरे में सिमटती जा रही है। मीडिया, जिसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है, अब कई बार सत्ता–हित में अपनी भूमिका निभाता दिखाई देता है, जिससे जनहित के मुद्दे पीछे छूट जाते हैं। यह शोध विभिन्न रिपोर्टों, केस स्टडीज़ और हालिया घटनाओं के माध्यम से यह समझने का प्रयास करता है कि भारत में लोकतांत्रिक मूल्यों की वर्तमान स्थिति क्या है और इसमें आम नागरिक, पत्रकार और मीडिया संस्थान किस प्रकार से प्रभावित हो रहे हैं। शोध का उद्देश्य एक ऐसा संवाद आरंभ करना है जो लोकतंत्र की आत्मा को पुनः जाग्रत कर सके।

मुख्य शब्द

लोकतंत्र, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, मीडिया की स्वतंत्रता, असहमति, नागरिक अधिकार.

प्रस्तावना

भारतीय लोकतंत्र एक ऐसी प्रणाली रही है जिसमें विचारों की विविधता, संवाद की स्वतंत्रता और सत्ता से सवाल करने का अधिकार नागरिकों को प्राप्त है। संविधान के अनुच्छेद 19(1)(a) के अंतर्गत हर नागरिक को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी गई है, किंतु बीते दशक में ऐसा प्रतीत होता है कि सत्ता से सवाल पूछना एक 'राजनीतिक अपराध' बन गया है।

लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति नहीं, बल्कि विचारों, मतभेदों और प्रश्नों की एक जीवंत संस्कृति है। भारतीय संविधान ने प्रत्येक नागरिक को यह अधिकार दिया है कि वह न केवल अपने विचार स्वतंत्र रूप से व्यक्त करे, बल्कि व्यवस्था से जवाबदेही भी मांगे, किंतु वर्तमान सामाजिक–राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में यह सवाल उठना लाज़िमी है कि क्या आज वास्तव में कोई भी व्यक्ति निडर होकर प्रश्न पूछ सकता है?

वर्तमान परिदृश्य में देखा जा रहा है कि जो स्वर कभी लोकतंत्र की धड़कन थे, वे आज 'राष्ट्रविरोध' या 'अस्थिरता' के आरोपों के नीचे दबाए जा रहे हैं। आलोचना और असहमति को देशद्रोह जैसा गंभीर अपराध मान लिया जाना इस बात का संकेत है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता खतरे में है। वहीं, मीडिया जिसे सच का आईना और जनमत का संवाहक माना जाता है, वह कई बार सत्ता की भाषा बोलता हुआ दिखाई देता है।

यह प्रस्तावना इस शोध की ज़रूरत को रेखांकित करती है, जो यह समझने का प्रयास करता है कि कैसे एक लोकतांत्रिक राष्ट्र में सवाल पूछना धीरे–धीरे गुनाह बनता जा रहा है साथ ही, यह अध्ययन उस सामाजिक–सांस्कृतिक बदलाव की पड़ताल करता है, जिसमें नागरिक अधिकारों की सीमाएँ निरंतर संकुचित हो रही हैं और असहमति के स्वर हाशिए पर धकेले जा रहे हैं।

साहित्य समीक्षा

भारत में लोकतांत्रिक मूल्यों के ह्रास को लेकर किए गए पूर्ववर्ती अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि देश में संवाद, असहमति और प्रेस की स्वतंत्रता जैसे मूलभूत लोकतांत्रिक तत्वों पर संकट गहराता जा रहा है। सेन (2005) ने लोकतंत्र को एक तर्कशील और संवादात्मक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया है, जिसमें असहमति को लोकतंत्र के स्वास्थ्य का संकेत माना गया है। वहीं चॉम्स्की (2017) ने राज्य–प्रायोजित प्रचार तंत्र और मीडिया नियंत्रण को लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के लिए गंभीर खतरा बताया है। मेहता (2019) का मत है कि भारत में लोकतंत्र अब केवल चुनावों तक सीमित होता जा रहा है, जबकि थापर (2021) और रॉय (2018) ने असहमति के दमन को भारतीय लोकतंत्र की ऐतिहासिक परंपरा के विरुद्ध करार दिया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी इस गिरावट की पुष्टि होती है V-Dem Institute (2023) ने भारत को श्म्समबजवतंस ।नजवबतंबलश और रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स (RSF, 2024) ने इसे अत्यंत सीमित प्रेस स्वतंत्रता वाला देश घोषित किया है। इन सभी अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि भारत में 'सवाल पूछने' की संस्कृति अब राजनीतिक संदेह और दबाव के घेरे में आ गई है, जो लोकतंत्र की आत्मा पर सीधा प्रहार है।

शोध के उद्देश्य

यह शोधपत्र निम्नलिखित उद्देश्यों को केंद्र में रखकर तैयार किया गया है:

1. लोकतंत्र में प्रश्न पूछने की भूमिका का विश्लेषण करना।
2. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर बढ़ते दमन का समसामयिक अध्ययन।
3. मीडिया की स्वतंत्रता की वर्तमान स्थिति को आंकना।

शोध प्रविधि

यह अध्ययन गुणात्मक (Qualitative) प्रविधि पर आधारित है, जिसमें द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं का उपयोग किया गया है। डेटा संग्रह के लिए प्रमुख स्रोतों में वर्तमान रिपोर्टें, प्रासंगिक पुस्तकें, शोध लेख, स्वतंत्र पत्रकारों की रिपोर्टिंग और सरकारी दस्तावेज शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, वैश्विक स्तर पर लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को मापने वाले प्रमुख अंतरराष्ट्रीय सूचकांकों जैसे V-Dem (Varieties of Democracy), RSF (Reporters Without Borders) और Freedom House की रिपोर्टों का भी विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में विश्लेषण की दो प्रमुख तकनीकों का प्रयोग किया गया है पहली, वर्णनात्मक विश्लेषण (Descriptive Analysis), जिसके माध्यम से मीडिया से संबंधित रुझानों और घटनाओं को विस्तारपूर्वक समझने का प्रयास किया गया है; और दूसरी, सामग्री विश्लेषण (Content Analysis), जिसके अंतर्गत मीडिया विमर्श और सोशल मीडिया पर चल रही

प्रवृत्तियों का गहन अध्ययन किया गया है। ये दोनों तकनीकें अध्ययन के निष्कर्षों को गहराई प्रदान करने में सहायक रही हैं।

अध्ययन की सीमाएं

यह अध्ययन मुख्यतः शहरी परिप्रेक्ष्य और प्रचलित समाचारों पर आधारित है। ग्रामीण क्षेत्रों की आवाज़ें सीमित रूप से ही शामिल हो पाई हैं।

प्रमुख विश्लेषण और चर्चा

लोकतंत्र का मूल सिद्धांत नागरिकों को यह अधिकार देता है कि वे न केवल शासन को चुनें, बल्कि उसे सवालों के घेरे में भी ले सकें। भारत जैसे देश में यह अधिकार संविधान द्वारा सुनिश्चित किया गया है किंतु 21वीं सदी के दूसरे दशक में जिस प्रकार सवाल उठाने वालों को चुप कराया गया है, पत्रकारों को निशाना बनाया गया है और असहमति की आवाज़ को 'राष्ट्रद्रोह' का लेबल दिया गया है, वह चिंताजनक है।

1. लोकतंत्र का सार और उसकी भारतीय व्याख्या

भारतीय लोकतंत्र की नींव समावेशिता, बहुलवाद और उत्तरदायित्व पर टिकी है। संविधान ने नागरिकों को मौलिक अधिकार दिए हैं जिनमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (अनुच्छेद 19) प्रमुख है। किन्तु लोकतंत्र केवल एक चुनावी प्रक्रिया नहीं है, यह एक निरंतर संवाद और आलोचना का मंच है।

"A functioning democracy is one where the citizen can question power without fear." (Sen, 2005)

भारत में लोकतंत्र की व्याख्या को अक्सर ''लोकतंत्र बनाम राष्ट्रवाद'' की बहस के चश्मे से देखा जाने लगा है। आलोचना को ''राष्ट्र विरोध'' कहा जाना इसी प्रवृत्ति का संकेत है।

2. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर बढ़ते प्रतिबंध

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता किसी भी लोकतंत्र की रीढ़ होती है परंतु 2014 के बाद यह देखा गया है कि इस स्वतंत्रता पर अघोषित सेंसरशिप बढ़ी है।

मानवाधिकार वॉच (2022) के अनुसार, भारत में असहमति जताने वाले पत्रकारों, शिक्षाविदों और कार्यकर्ताओं को "राज्य की सुरक्षा" के नाम पर जेल में डाला गया है।

UAPA और IT Act जैसे कानूनों का प्रयोग अभिव्यक्ति को नियंत्रित करने के लिए किया गया।

"Silencing dissent is the first step towards authoritarianism". (Chomsky, 2017)

3. मीडिया की भूमिकाः प्रहरी से प्रचारक तक

भारतीय मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है किंतु आज उसका एक बड़ा वर्ग सत्ता का प्रचारक बनता जा रहा है।

TRAI की रिपोर्ट (2020) बताती है कि टेलीविजन चौनलों की बड़ी संख्या राजनीतिक दलों या औद्योगिक घरानों से प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी है।

सत्ता की आलोचना करने वाले पत्रकारों जैसे कि राणा अय्यूब, रविश कुमार आदि को निशाना बनाया गया।

डिजिटल मीडिया एक नया मंच बना, पर अब उस पर भी नियंत्रण के प्रयास दिखते हैं (IT Rules 2021)।

4. सवाल पूछने की संस्कृति पर संकट

पहले जो 'सवाल' लोकतंत्र की आत्मा माने जाते थे, अब 'षड्यंत्र' की तरह देखे जा रहे हैं।

विश्वविद्यालयों में असहमति की आवाज़ों को दबाना (जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, हैदराबाद विश्वविद्यालय की घटनाएं) इसका उदाहरण हैं।

सड़क से संसद तक, सवाल करने की बजाय 'एकता के नाम पर चुप्पी' को प्राथमिकता दी जा रही है।

"लोकतंत्र में मौन सबसे बड़ा खतरा है, क्योंकि वह तानाशाही का मार्ग प्रशस्त करता है।" (Ambedkar, 1949)

5. सोशल मीडियाः एक अवसर या नया खतरा?

सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति को एक नया मंच दिया, लेकिन अब वह भी निगरानी और प्रचार का औजार बनता जा रहा है।

ट्रोल आर्मी, बॉट्स और फेक न्यूज़ के माध्यम से असहमति को बदनाम किया जा रहा है।

रिपोर्ट्स के अनुसार भारत सरकार ने 2021 में ट्विटर से 6000 से अधिक ट्वीट हटाने की मांग की थी जो आलोचनात्मक थे।

6. अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भारत

भारत का लोकतंत्र वैश्विक लोकतांत्रिक सूचकों में लगातार नीचे गिरा है। V-Dem Report (2023) ने भारत को Electoral Autocracy कहा। RSF Press Freedom Index (2024) में भारत 161वें स्थान पर यह संकेत देते हैं कि भारत में लोकतांत्रिक संस्थाएं और स्वतंत्रता लगातार कमजोर हो रही हैं।

7. नागरिकों की भूमिका और उम्मीद की किरण

हालांकि स्थितियां चिंताजनक हैं, फिर भी नागरिक आंदोलनों में संभावनाएं हैंः

- शाहीन बाग आंदोलन ने दिखाया कि आम नागरिक लोकतंत्र की रक्षा में खड़े हो सकते हैं।
- किसान आंदोलन ने भी लोकतांत्रिक असहमति की शक्ति को पुनः स्थापित किया।
- युवा पत्रकार, स्वतंत्र यूट्यूब चौनल्स, पॉडकास्ट और ब्लॉग्स स्वतंत्र मीडिया की नयी धारा बना रहे हैं।

निष्कर्ष

यह शोध स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि भारत में लोकतंत्र, जो कभी विचारों की विविधता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और जनसरोकारों की पारदर्शिता का प्रतीक था, आज गहरे संकट के दौर से गुजर रहा है। सवाल पूछना, जो लोकतंत्र की आत्मा है, अब सत्ता के लिए असहज विषय बन गया है। असहमति और आलोचना को राष्ट्रविरोधी ठहराने की प्रवृत्ति ने नागरिकों के संवैधानिक अधिकारों को सीमित किया है और भय के वातावरण को जन्म दिया है।

मीडिया, जो लोकतंत्र का प्रहरी माना जाता था, अब बहुधा प्रचारक की भूमिका में आ गया है, जिससे जनमत गुमराह हो रहा है और जनता के असली मुद्दे हाशिए पर चले गए हैं। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध, मीडिया पर नियंत्रण, असहमति के स्वर को दबाना, और डिजिटल माध्यमों को निगरानी के उपकरण में बदलना, यह सब लोकतांत्रिक संस्थाओं के क्षरण की ओर संकेत करते हैं।

हालाँकि, इस परिदृश्य में कुछ आशाएं भी विद्यमान हैं, स्वतंत्र पत्रकारिता के प्रयास, सोशल मीडिया पर उभरते वैकल्पिक मंच, और जन आंदोलनों में नागरिकों की सक्रियता यह दिखाती है कि लोकतंत्र अभी भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। यह शोध इस आवश्यकता को रेखांकित करता है कि लोकतंत्र को पुनः जीवित करने के लिए नागरिकों को न केवल जागरूक रहना होगा, बल्कि निरंतर प्रश्न भी करना होगा।

लोकतंत्र मौन में नहीं, संवाद में फलता–फूलता है, और यह संवाद तभी संभव है जब अभिव्यक्ति को डर के बजाय अधिकार माना जाए। अतः लोकतंत्र की रक्षा के लिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, मीडिया की निष्पक्षता और नागरिक सहभागिता को सशक्त करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

सुझाव

मीडिया की स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा हेतु कई ठोस कदम उठाए जाने की आवश्यकता है। सबसे पहले, मीडिया की स्वायत्तता को सुनिश्चित करने के लिए एक स्वतंत्र और निष्पक्ष नियामक निकाय की

स्थापना की जानी चाहिए, जो सरकार के प्रभाव से मुक्त हो और मीडिया संस्थानों की जवाबदेही भी तय करे। साथ ही, UAPA जैसे कठोर कानूनों की समीक्षा आवश्यक है, ताकि पत्रकारों और आम नागरिकों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर अनावश्यक अंकुश न लगे। विश्वविद्यालयों में असहमति और वैचारिक बहस की संस्कृति को बढ़ावा देकर लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, डिजिटल माध्यमों पर सरकारी निगरानी की प्रक्रिया पारदर्शी और जवाबदेह होनी चाहिए, ताकि निजता के अधिकार का हनन न हो। अंततः, नागरिक शिक्षा (Civic Literacy) को स्कूल स्तर पर अनिवार्य किया जाना चाहिए, जिससे बच्चे प्रारंभ से ही अपने अधिकारों, कर्तव्यों और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं से परिचित हो सकें।

संदर्भ सूची

1. Ambedkar, B. R. (1949). Constituent Assembly Debates, Volume 11, Government of India.
2. Banaji, S.; & Bhat, R. (2020) WhatsApp Vigilantes and the Digital Propagation of Hindu Nationalism in India. New Media & Society, https://doi.org/10.1177/1461444820933244, Accessed on 20/03/2025.
6. Chomsky, N. (2017) *Media Control: The Spectacular Achievements of Propaganda,* Seven Stories Press, New York.
4. Human Rights Watch (2022) India: Human Rights Trends, https://www.hrw.org, Accessed on 25/03/2025.
5. Kumar, R. (2020) The Free Voice: On Democracy, Culture and the Nation, Speaking Tiger, New Delhi.
6. Mehta, P. B. (2019) *The Burden of Democracy,* Penguin Books, Gurgaon, Haryana.
7. Ministry of Electronics & Information Technology. (2021) Information Technology (Intermediary Guidelines and Digital Media Ethics Code) Rules, https://www.meity.gov.in/content/intermediary-guidelines, Accessed on 25/03/2025.
8. Rajagopal, A. (2022) *Politics After Television: Hindu Nationalism and the Reshaping of the Public in India,* Cambridge University Press, New Delhi.
9. Reporters Without Borders. (2024) World Press Freedom Index, https://rsf.org/en/index, Accessed on 25/03/2025.
10. Roy, A. (2018) *My Seditious Heart: Collected Non-Fiction,* Penguin Random House, Gurgaon, Haryana.
11. Sen, A. (2005) *The Argumentative Indian,* Penguin Books, Gurgaon, Haryana.
12. Thapar, R. (2021) *Voices of Dissent: An Essay,* Aleph Book Company, New Delhi.
13. TRAI. (2020). Ownership of Media in India, Telecom Regulatory Authority of India.
14. V-Dem Institute. (2023) Democracy Report 2023: Defiance in the Face of Autocratization. https://v-dem.net, Accessed on 25/03/2025.

****